DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU—Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I
Sub. — SANSKRIT
Paper — I
कारक प्रकरणम्
कारक-सूत्र व्याख्या

5×3 = 15 Marks

4. अकथितं च (1/4/51)

जब किसी की अपादान आदि विशेष संज्ञा न कहनी हो तो उसकी कर्मसंज्ञा हो जाती है अर्थात् कुछ क्रियाएँ द्विकर्मक होती हैं। 'कथित' (प्रधान) कर्म के अतिरिक्त उनका एक 'अकथित' (गौण) कर्म भी रहता है। जहाँ अपादान, सम्प्रदान, अधिकरण आदि कारकों का प्रयोग हो सकने पर भी वक्ता उनको नहीं कहना चाहता, वहाँ उन कारकों के स्थान पर कर्मकारक होता है और उसे 'अकथित' कर्म कहते हैं। ऐसे स्थल में 'अकथितं च' सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है। पर ऐसे स्थल के लिए केवल सोलह धातुएँ ही परिगणित हैं जो सूत्र रूप में इस प्रकार हैं—

'दुह्याच् पच् दण्ड् रुधिप्रच्छि चिब्रू शासुजि मन्थ् मुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम् ॥'

अर्थात् दुह्, याच्, पच्, दण्ड् आदि इन्हीं धातुओं के ही अपादानादि विशेष कारकों की अविवक्षा होने पर कर्मसंज्ञा होती है। उदाहरण—

दुह्—गां दोग्धि पयः। (गाय से दूध दुहता है) में कर्ता का ईप्सिततम होने के कारण 'पयः' प्रधान कर्म है और इस प्रधान कर्म से सम्बन्ध रखनेवाली गाय 'गां' गौण या अकथित कर्म है, क्योंकि गाय पय के निमित्त दुही गयी है। पय का गाय से पृथक्करण हुआ है, अतः अपादान में भी 'गोः' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। अपादानत्व की विवक्षा में 'गोः दोग्धि पयः' प्रयोग होगा और 'गोः' में पंचमी विभक्ति होगी। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझना चाहिए। अन्य उदाहरण — बलिं याचते वसुधाम्। तण्डुलानोदनं पचति। गर्गान् शतं दण्डयति। व्रजमवरुणद्धि गाम्। माणवकं पन्थानं पृच्छति। वृक्षमवचिनोति फलानि। माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा। शतं जयति देवदत्तम्। सुधां क्षीरनिधिं मध्नाति। देवदत्तं शतं मुष्णाति। ग्रामम् अजां नयति, हरति कर्षति वहति वा।

—— 0 ——

क्रमशः जारी